चकाचौंध हवेलियों से टीप-लिपाई के मकानों तक

सामंतों की धरती से आये पत्रकारों-बुद्धिजीवियों को हर जगह सामन्तवाद ही दिखाई देता है, इसीलिए तो बंगाल-बिहार और पूर्व की सामन्ती तन्त्र और सोच वाली धरती से दिल्ली (हरयाणा के दिल) में आ बसे इन इंसानियत के ठेकेदारों को जब हरयाणा (आज का हरयाणा+दिल्ली+पश्चिमी उत्तर-प्रदेश+उत्तराखंड+उत्तरी राजस्थान+ब्रज से सटे मध्यप्रदेश) के गावों में ऊँची-ऊँची हवेलियाँ और चौपालें दिखती हैं तो उनकी तुलना उनके यहाँ के सामन्ती ठाकुरों और जमींदारों की हवेलियों से कर बैठते हैं और कयास लगा देते हैं कि कहीं ये हवेलियाँ और चौपालें भी गरीबों पर ढाए जुल्मों-सितम से तो नहीं बनी?

अरे कुँए के मेंडको वहाँ की सोच और सिद्धांतों को वहीँ छोड़ के तब हरयाणा पे कुछ लिखा करो। ये हरयाणा है यहाँ हर जमींदार किसान है और अपने खेतों में खुद खट के खाता और कमाता आया है, कभी हवेलियों की मीनारों पे बैठ गरीबों पे हुक्म नहीं चलाये इन्होनें; बल्कि गरीबों संग गरीब बन खेतों में मेहनत करके कमाया है, तब जा के हर गली-चौराहे में ऊँची-ऊँची हवेलियाँ दिखती हैं, जो कि तुम्हारे वहाँ के गावों-गौरों में इक्का-दुक्का ही होती हैं।

और नहीं तो इसका अंदाजा इसी बात से लगा लिया करो कि अगर हमारे यहाँ सामन्ती प्रथा होती तो हर किसी के पास नहीं अपितु तुम्हारी तरह एक गाँव के साथ सिर्फ एक या दो ही हवेलियाँ होती और बाकी सब झोंपड़े होते। असल में गलती तुम्हारी नहीं है, तुम्हारे यहाँ गावों में या तो बिलकुल ही गरीब होते हैं या फिर बहुत ही ज्यादा अमीर। परन्तु ये हरयाणा की धरती है यहाँ एक जमींदार भी टुकड़ों पे पलता हुआ ढून्ढ सकते हो और एक दलित का जमींदारों की हवेलियों को टक्कर देता हुआ घर भी।

और सच कहूँ तो अब हरयाणा में वो जमींदार भी कम ही रह गए हैं जिनके यहाँ ऊँची-ऊँची हवेलियाँ हुआ करती थी या हैं। कहीं ये तुम्हारी ही सामन्तवादी सोच और प्रचार का नतीजा तो नहीं? क्या इरादा बना के आये हो मेरे भाई की तुम्हारे वहाँ का सामन्तवाद यहाँ भी फैलाना है? वहाँ का तो खत्म कर नहीं सकते अब यहाँ फैलाने आये हो?

आज के दिन हालत ये हो गई है कि हर पीढ़ी में नया बनाने की आदत से मजबूर यहाँ के ये जमींदार पुरानी हवेलियों को तोड़ उनको नया बनाने का ध्येय सा शुरू तो कर देते हैं परन्तु बढती लागत और सिमटती बचत के चलते उनके ये सपने सिर्फ टिप-लिपाई के बिना डेंट-पेंट के मकानों तक रह जाते हैं। और वो इसलिए क्योंकि कमाई का बड़ा हिस्सा मुट्ठी भर लोगों की जेबों में जाने लगा है।

सो मेरे बुद्धिजीवियों अगर वाकई में हरयाणा और एन. सी. आर. में बस के यहाँ के लोगों को कुछ देना और इनके लिए लड़ना चाहते हो तो इनको इनकी फसलों के उचित दाम दिलवाओ, वो उचित दाम जो मुट्ठी भरों की जेबों में जा रहे हैं। क्यों नहीं तुम्हारी कलमें उनके इस दर्द को लिखती कभी? क्यों तुम्हारे मीडिया हाउसों की चौपालें उनके इन मुद्दों पे सजती कभी? क्यों गीदड की तरह घूम-फिर के सिर्फ गाजर के खेत ही नजर आते हैं तुम्हें?

क्यों तुम्हारे इन झूठे प्रपंचों भरे ढकोसलों से ऐसा ही लगता है जैसे तुम भी किसी कोर्पोरेट घराने और सरकारों की तरह इनको आर्थिक ही नहीं अपितु सांस्कृतिक तौर पर भी तबाह करने पर लगे हुए हो?

अरे कभी इनके इन मुद्दों पर भी ध्यान लगा लिया करो तो कुछ पुन्य कमा लोगे? क्या लोगे उन मुद्दों पे ढोल पीट के जिनके बीमार तुम खुद भी हो पर जैसे पापी के मन में डूम का डांडा होता है वैसे ही क्यों हमारी बची खुची संस्कृति को भी बर्बाद करने पर तुले हुए हो?

कहीं इस बात से तो नहीं डरे हुए और मुंबई के तजुर्बे से सावधान कहूँ या डरे सहमे से कहूँ कि जैसे तुमको ये डर सताता हो कि कहीं यहाँ भी स्थानीय लोग यह मुद्दा न उठा दें कि मुंबई में आ के बसने वाले को जैसे मराठी सीखनी अनिवार्य है वैसे ही हरयाणा में आके बसने वाले के लिए हरयाणवी या हिंदी अनिवार्य है? तुम चिंता ना करो हम बड़े दिलवाले लोग हैं, हम ऐसी कोई मांग तुमपे नहीं थोपेंगे लेकिन मेरे भाई कृपया करके मेरी संस्कृति का पीछा छोड़ दो, मत इतना आजमा के देखो हमारे सब्र को कि फिर आखिर में अपना अस्तित्व बचाने को हमें भी भाषावाद और क्षेत्रवाद जैसे कुचक्रों में पड़ना पड़े।

हम सामंतवादी नहीं हैं, हम धन-साधन को दबाने वाले लोग नहीं हैं, ऐसे होते तो हमारे गावों-गौरों में अमीर-गरीब का अंतर पूरे भारत में सबसे कम ना होता।